Snehal Sindhu

Monthly Bulletin for Divine Message of Spiritual Relationship, Friendship and Love
Vol. 012 Issue 03 MARCH 2026 Pages 18 A.S. Rs 100

Blessings to New Saint Brothers

P.P. Guruji's Pragatya Din celebration at Delhi

सत्संग समाचार

✻ सोमवार, दि. २ मार्च होली के पर्व पर ब्र.स्व. भगतजी महाराज के १९७वें और मंगलवार, दि. ३ मार्च धुलेंडी के मंगल अवसर पर संतभगवंत साहेबजी के ८७वें प्रागट्यपर्व निमित्त प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई, पू. अश्विनभाई तथा संतभाईयों अनुपम मिशन ब्रह्मज्योति-मोगरी पधारे थे।

Divine Spiritual Exhibition at Anoopam Mission

दि. २ को वशीभाईने भगतजी महाराज के प्रसंग बताये तथा दि. ३ को भरतभाईने साहेबजी के विशिष्ट गुणों का दर्शन कराया।

भरतभाई द्वारा 'साहेबजी अनुपम' केसेट का अनावरण हुआ। सभी प्रदेश के युवाओं द्वारा विशिष्ट Divine Spiritual Exhibition रखा गया था, जिसका सभीने लाभ लिया और भरतभाईने बहुत सराहना भी की।

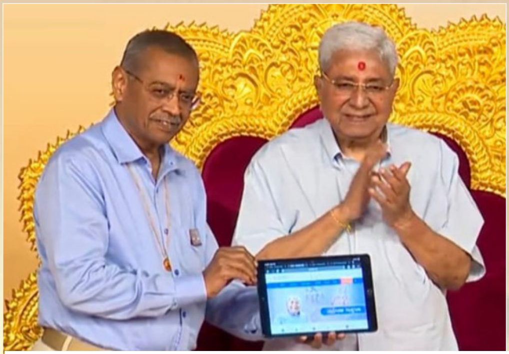

SantBhagvant Sahebji's Pragatya DIn celebration at Anoopam Mission, Mogri

पवई की ओर से संतभाईयोंने संतभगवंत साहेबजी को विशिष्ट हार पहनाया।

सभा के बाद सभी संतभाईयों गुणातीत ज्योत में प.पू. हंसादीदी को भी मिले थे और सत्संग किया।

At Guruhari Kakaji Maharaj Samadhi Sthan

At Gunatit Jyot

✻ शुक्रवार, दि. ६ मार्च को सद्भाव फाउन्डेशन की ओर से सु.श्री. नीताबहन दोशी की सहाय से सायन अस्पताल में जरूरतमंद मरीजों को सहायरुप होने Orthopedic and Spine Department में करीब २० लाख के Medical equipments दिये गये और अस्पताल के सभी कर्मचारीओंने सद्भाव फाउनडेशन की इस सेवा के लिये सराहना की।

Snehal Sindhu Mar 2026-V08.indd 2 02-06-2026 12:43:03

Distribution of Medical equipments to Sion Hospital

✲ शनिवार, दि. ७ से दि. १४ मार्च दौरान प.पू. गुरुजी के ८९वें प्रागट्यपर्व निमित्त दिल्ली, पंजाब, जगराव में दिव्य स्मृति यात्रा का आयोजन हुआ, जिसमें करीब १३० हरिभक्तोंने उत्साह से भाग लिया।

इस यात्रा में गुरुहरि काकाजी महाराज के प्रसादी के स्थानों पर सभी संतभाईयों, संतबहनों और हरिभक्तोंने मुलाकात ली, जिसमें आत्मीय संस्कारधाम मंदिर, मेहडियाना साहेब, सबद्दी, लुधियाना मंदिर, चंदीगढ-Rock Garden, Sukhna Lake, अमृतसर, Attari Wagha Border, Golden Temple, जलियानावाला बाग, Partition Museum, कुरुक्षेत्र, गीता उपदेश स्थल, रणभूमि दर्शन, ब्रह्म सरोवर इत्यादि थे।

Glimpses of Punjab Yatra

Snehal Sindhu Mar 2026-V08.indd 3 02-06-2026 12:43:04

Glimpses of Punjab Yatra

Snehal Sindhu Mar 2026-V08.indd 4 02-06-2026 12:43:06

Glimpses of Punjab Yatra

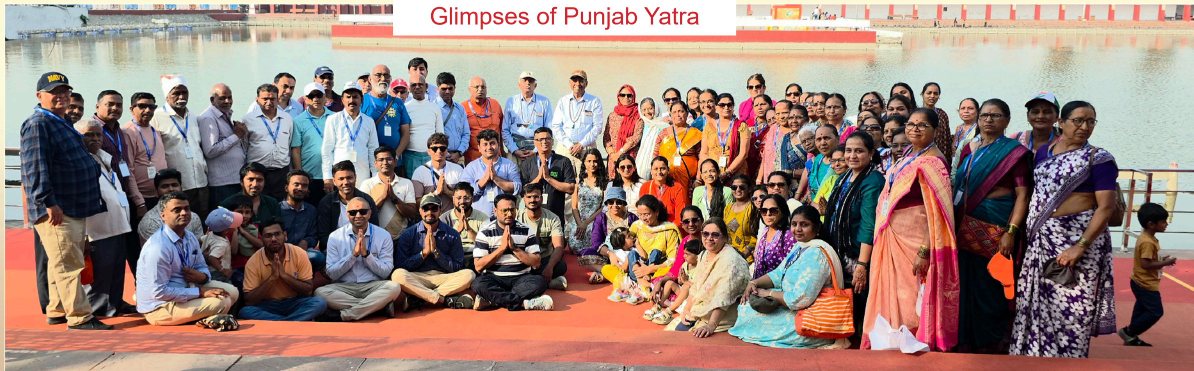

दि. ७ मार्च गुरुहरि काकाजी महाराज के ४१वे स्मृतिदिन की विशिष्ट भजन संध्या जगराओं-पंजाब में Rachana Banquet में दिल्ली के प.पू. सुहृदस्वामीजी और संतों, पवई के प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई, पू. अश्विनभाई और संतभाईयों, प.पू. आनंदीदीदी और संतबहनों, पवई से पू. माधुरीबहन और अन्य संतबहनों तथा स्थानिक एवं मुंबई के हरिभक्तों की उपस्थिति में भक्तिभाव से मनाई गई।

Bhajan Sandhya at Jagraon-Punjab

Snehal Sindhu Mar 2026-V08.indd 5 02-06-2026 12:43:09

प.पू. भरतभाई ने आशीष देते हुए कहा कि गुरुहरि काकाजी महाराज को सुहृदभाव बहुत पसंद था। आज हरेक केन्द्र में उनकी स्मृति में भजन संध्या हो रही है वह सचमुच सुहृदभाव का दर्शन कराता है। स्वामिनारायण भगवानने पृथ्वी पर प्रगट होकर ऐसे गुणातीत स्वरुपों की प्रणाली दी। हम केवल इतना सोचे कि हम काकाजी के संबंध में नहीं आते तो हमारा जीवन कैसा होता? तो समझमें आयेगा कि हम कहाँ है और गुणातीत संतोंने हम पर बहुत ज्यादा करुणा की है। काकाजी को स्वधाम जाकर आज ४० साल हुए, लेकिन वे इन गुणातीत स्वरुपों द्वारा प्रगट ही है वह सहज ही महसूस होता है। काकाजी कहते थे कि भगवान हमारे साथ अखंड है। फिर वो तुरंत बोलते थे कि तो फिर खंडित क्यों करते हो? अभाव-अवगुण में गये, मनुष्यभाव आया, मायिकभाव आया वह खंडित किया। भगवान हमारे साथ हरपल है वह हमें भूलना नहीं है। बहुत तकलीफ सहन करके काकाजीने बहुत सारे कार्य किये। गुरुजीने यहाँ जो कुटुंबभाव फैलाया है वह काकाजीने पहले ही बता दिया था। काकाजी चाहते तो खुद का बहुत बडा साम्राज्य खडा कर सकते थे, लेकिन वे सभी के साथ सामान्य बनकर रहे। भगवान और संत मिल गये वही सबसे बडी प्राप्ति है। हम कितने ज्ञानी है वह जरुरी नहीं है, लेकिन भगवान और संत के साथ हमारा संबंध कितना दृढ है वह ज्यादा जरुरी है।

Bhajan Sandhya at Jagraon-Punjab

किसीने दिनकरभाई को पूछा कि आपने सत्संग में आके क्या प्राप्त किया? तो उन्होंने कहा कि **(१)** सबसे पहले कर्ताहर्ता भगवान को माने। जो भी प्रसंग बनते है उसमें प्रभु का ही हाथ है। ऐसा मानकर हमें जीवन जीना है। **(२)** गुणातीत संतों और हरिभक्तों का संबंध प्राप्त किया। उस समय में भी वही था तो दिनकरभाईने तीसरा मुद्दा मुझे बोलने कहा। तो मैंने कहा - **(३)** हमें सकारात्मकता से कैसे जीवन जीना है वह दिनकरभाई के जीवन से सहज ही दिखता है। लुधियाना में आत्मीय संस्था में काकाजी की मूर्ति विराजमान की है वह गुरुजी के कहने पर प्रेमस्वरुपस्वामीजी द्वारा अद्‌भुत कार्य हुआ है। **अगले साल गुरुजी का ९०वाँ प्रागट्यपर्व 'दिव्य अनमोल स्मृति' के रुप में मनानेवाले है** तब तक अंदरोअंदर हमारी आत्मीयता, सुहृदभाव ज्यादा दृढ हो वही प्रार्थना।

प.पू. सुहृदस्वामीजी ने कहा कि गुरुहरि काकाजी का प्रथम दर्शन मुझे १९ मई, १९८१ में हुआ था। तब गुरुजी के सानिध्य में आके कुछ ६ दिन ही हुए थे और आज ४६ साल हो गये। काकाजी दिल्ली आते थे तब उनकी सेवा करने का मौका मिलता था। दिल्ली और पंजाब में सत्संग खडा करने के लिये उन्होंने बहुत परिश्रम किया। ज्यादातर वे खुल्ली जीप में ही आते थे। हरिभक्तों की तकलीफ दूर करने के लिये बहुत धुन करते थे। उस समय परिस्थिति इतनी अच्छी नहीं थी, फिर भी काकाजी सभी को मिलने जाते थे। दिसंबर-जनवरी में ठंडी बहुत होती थी फिर भी काकाजी हर जगह विचरण करते थे। उसके फलस्वरुप आज यहाँ हरिभक्तों का बडा समाज खडा हो गया। तो काकाजी और गुरुजी के परिश्रम को हम विफल जाने न दे और उनकी मर्जी के मुताबिक जीवन जीये वही प्रार्थना।

उसके बाद हार विधि तथा मुख्य अतिथिओं को खेस अर्पण हुआ।

गुरुहरि काकाजी महाराज की स्मृति निमित्त भजन संध्या अन्य केन्द्रो में भी भक्तिभाव से मनाई गई।

Snehal Sindhu Mar 2026-V08.indd 6 02-06-2026 12:43:09

Bhajan Sandhya at Leicester-UK

Bhajan Sandhya at Sydney-Australia

Bhajan Sandhya at Paris-France

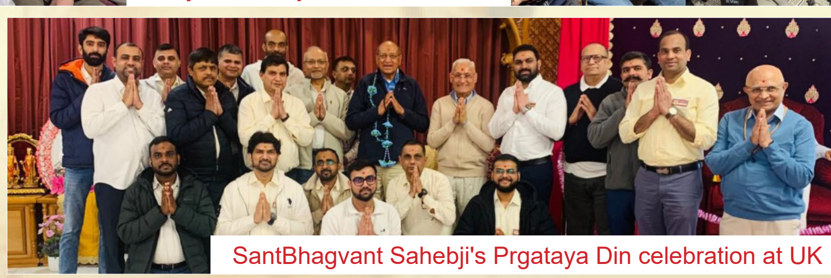

SantBhagvant Sahebji's Prgataya Din celebration at UK

✻ रविवार, दि. ८ मार्च को प.पू. दिनकरभाई, पू. किशोरभाई मास्टर्सने लंडन में कई हरिभक्तों की हाजरी में संतभगवंत साहेबजी का प्रागट्यदिन आनंदोत्सव के साथ मनाया।

Women's Day celebration at Karjat

✻ रविवार, दि. ८ मार्च को योगी डिवाईन सोसायटी और सद्भाव फाउन्डेशन की ओर से महिलादिन निमित्त कर्जत में महिलाओं की स्वास्थ्य की जाँच, खेल, हलदी कंकु के कार्यक्रम में करीब १०८ महिलाओंने सहभागी होकर इस दिन को आनंद से मनाया।

✻ शुक्रवार, दि. १३ मार्च प.पू. गुरुजी के ८९वाँ प्रागट्यपर्व के मंगल अवसर हरिधाम से प.पू. प्रेमस्वरुपस्वामीजी, पू. निर्मलस्वामीजी, और संतो, प.पू. सौजन्यबहन और संतबहनों, सांकरदा से प.पू. स्नेहलस्वामीजी, प.पू. बापुस्वामीजी और संतों, कंथारिया से प.पू. विज्ञानस्वामीजी, अनुपम मिशन से पू. पीटरभाई और

Snehal Sindhu Mar 2026-V08.indd 7 02-06-2026 12:43:10

संतभाईयों, गुणातीत प्रकाश से पू. इलेशभाई, पू. विरेनभाई और संतभाईयों, पवई से प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई, पू. अश्विनभाई और संतभाईयों, पू. माधुरीबहनों संतबहनों, कई हरिभक्तों तथा महानुभावों की हाजरी में दिल्ली में आनंदोत्सव के साथ मनाया गया।

सुबह महापूजा में पवई के नवदिक्षित संतभाईयों को गुरुजी के करकमलों से Badges तथा विज्ञानस्वामीजी द्वारा खेस अर्पण हुए।

Badges Arpan to Newly Saint Brothers

शाम की सभा के महोत्सव का मुख्य विषय योगी परिवार आनंदोत्सव के रुप में चलो यू-टर्न लेते हैं ऐसा रखा गया था।

प.पू. प्रेमस्वरुपस्वामीजी ने कहा कि आज तक गुरुजीने जो भी कार्य किये वो केवल गुरुहरि काकाजी को प्रसन्न करने के लिये ही किये। उन्होंने जो भी कुछ सहन किया है उसका मैं साक्षी हूँ। कभी भी अपने देह की परवा नहीं की, केवल काकाजी की ओर दृष्टि रखी। हरिप्रसादस्वामीजी कहते थे कि योगीबापा के पास आने के बाद हमने केवल उनका दर्शन ही किया है। वैसे गुरुजी का दर्शन करना यानि उनकी मर्जी क्या है वो हमें समझमें आ जाये। उनकी प्रकृति के विरुद्ध भी काकाजीने उन्हें आज्ञा दी थी। फिर भी कोई भी प्रश्न किये बिना वही किया जो उन्होंने कहा। जो निष्कपट होता है वह जरुर ब्रह्मस्वरुप हो जाता है। ऐसा निष्कपटभाव का संबंध उनका काकाजी के साथ था। योगीजी महाराज के पास बैठकर केवल धुन ही करते थे। मन का छोडकर केवल काकाजी की इच्छा जानकर कार्य किया। हमें ऐसा जीवन जीना है। मैंने कोठारीस्वामीजी और गुरुजी के पास बहुत कुछ सीखा है। तो हमें हमारी मनमानी ना करके गुरुजी की मर्जीनुसार जीवन जीना है। अपने भगवदी और गुरु के पास हृदय खुल्ला

Snehal Sindhu Mar 2026-V08.indd 8 02-06-2026 12:43:11

करना सरल नहीं होता। सबकुछ जानते हुए भी गुरुजी हमारे मन को अमन करने के लिये दास का दास बनकर रहते है। गुरुजी के सामने बहुत प्रसंग बने लेकिन उन्होंने केवल काकाजी का आसरा लिया। बुद्धिशाली होते हुए कभी भी अपनी मनमानी की नहीं। प्रसंग बनता है तब हम केवल बुद्धि लगाते है इसलिये दु:खी होते है। एक ही रास्ता है – नान्य: पंथा विद्यतेय। तो हे गुरुजी! आपकी रीत से, आपके बल से और आपको जो पसंद हो वही हम करें वही प्रार्थना।

प.पू. भरतभाई ने कहा कि गुरुजी का माहात्म्यगान करने के लिये कोई शब्द की जरुरत ही नहीं है, यहाँ दिल्ली और पंजाब के समाज का दर्शन करें वही उनका महिमा है। साधना करनेवाले साधक के लिये गुरुजी का जीवन आदर्श समान है। काकाजी कहते थे कि गुरुजी और महेन्द्रबापु का परिवर्तन हो सकता है तो हमारा तो होगा ही। गुरुजी के जीवन की कुछ खास बातें मैं बताता हूँ। **(१)** हम जिसको मानते है उनके प्रति असाधारण प्रीति होनी चाहिए। जिसका दर्शन हमने गुरुजी के जीवन में किया है। उनको काकाजी के प्रति अतिशय प्रेम था। काकाजी को सर्वदेशीयता, स्नेहलभाव पसंद था। वैसे उन्होंने अपना जीवन बनाया। **(२)** स्नेहलभाव – जब गुरुजी अ-३०१ में रहते थे तब उन्होंने वहाँ पाँच संतों की मूर्ति रखी थी। कोठारीस्वामीजी, प्रेमस्वरुपस्वामीजी, गुरुजी, शास्त्रीस्वामीजी और दासस्वामीजी। यह स्नेहलभाव है। गुरुजी ऐसा मानते थे कि मैं इस संतों से दूर रहता हूँ लेकिन वो मेरे पास ही है। यह हमें सीखना है कि हम जहाँ रहते है वहाँ ऐसे साथीदारों के साथ हमें स्नेहलभाव बढाना है। अंदरोअंदर कुटुंबभाव रखना वह गुरुजीने यहाँ के समाज को सीखाया है। **(३)** गुरुमुखी – गुरुजी का काकाजी के साथ खुल्ला संबंध था। आज भी प्रगट गुणातीत स्वरुपों के साथ उनका संबंध वैसा ही है। काकाजी कोई प्रसंग खडा करते तो वे हमेशा बहुत सोचते थे। एकबार काकाजी नंदाजी को मिलने गये थे तो गुरुजी को साथ लेकर गये थे। काकाजी उनसे मिलने गये उसके पहले गुरुजी को पूछा आपको कौन सा Juice पीना है? गाजर या Orange? तो गुरुजीने बोला Orange.

P.P. Guruji's Pragatya Din celebration at Delhi

Snehal Sindhu Mar 2026-V08.indd 9 02-06-2026 12:43:13

काकाजीने गाजर का Juice लेकर गुरुजी को दिया। गुरुजीने सोचा कि काकाजीने ऐसा क्यों किया? काकाजी के सामने थोडा पी लिया। तो काकाजीने गुरुजी को बोला कि मैंने पूछा तब आपने बोलना चाहिए कि काकाजी आप जो पीलाओ वो पी लेंगे। गुरु की मर्जी हो वैसे ही करना चाहिए। वैसे हमें गुरुमुखी होकर जीवन जीना है। ऐसे तो काकाजी के साथ उनके प्रेरणादायी बहुत प्रसंग है। तो हे गुरुजी! आप जो **U-Turn** लेने की बात करते है वैसे अर्चीमार्ग की ओर हम आगे बढे और गुरु की प्रसन्नता के लिये जीवन जीये वही प्रार्थना।

प.पू. वशीभाई ने कहा कि आज **U-Turn** की बात सभीने की वो योगीजी महाराजने हमें सुनृत में बताई कि कट वळी जवुं। आज पूरी दुनिया परिवर्तन के मार्ग पर आगे बढ रही है। गुरुजी की जो रीतिनीति और जीवन जीने की शैली थी उसमें साधु बनना अशक्य था। लेकिन योगीबापा, काकाजी की आज्ञा से अपने आपको पूरा बदल दिया। वे अपने मन का छोडकर काकाजी की मर्जी जानकर जीवन जीते है। जब असाधारण प्रीति हो जाती है तो मनमुखी अपनेआप छूट जाता है। हमें देखकर हरकोई सोचे कैसे होंगे काकाजी वो बात गुरुजीने यहाँ के हरिभक्तों के अंदर सिद्ध करवा दी। गुरुजीने यहाँ के समाज में ऐसी समझ डाली है कि तीन पिढी तक की साधुता के दर्शन होते है। हम देख सकते है, लेकिन Observe नहीं करते। गुरुजी देखते भी है और Observe भी करते है। तो गुरु की आज्ञा में हम जीवन जीते हो जाये वही प्रार्थना।

प.पू. गुरुजी ने आशीष बरसाते हुए कहा कि गुरुहरि काकाजी महाराज के साथ तारदेव मंदिर रहते थे तो उनकी कथावार्ता में बारबार वे कहते थे कि मन छोडो, गुरुमुखी बन जाओ। उस समय उतनी समझ नहीं थी कि छोडना कैसे है? काकाजी कहते थे कि ठरावरहित और गुरुमुखी। जब हम संत के पास जाते है तब हमारा कोई ना कोई ठराव होता है। यहाँ हम हार जाते है। काकाजी, आप मेरे पास जो करवाना चाहते हो वो मैं कर पाऊँ ऐसा सोचना है। मेरा खुद का कोई ठराव नहीं। आज भी मेरी वही रीत है कि अपना छोडकर काकाजी जो चाहते है, कहते है वो सुनकर, समझकर उनकी बात को पकडकर कार्य करना है। तो ऐसे विभूतिरुप संतों की मर्जी जानकर हमें चलते रहना है, पीछे मुँडकर देखना नहीं है। तो हमारे गुरुजनों तथा गुणातीत स्वरुपों के प्रति हमारा भरोसा अखंड रहे वही प्रार्थना।

उसके बाद सभी केन्द्रो की ओर से गुरुजी को हार-भेट अर्पण हुए।

अंत में युवकों द्वारा विशिष्ट नृत्य प्रस्तुत हुआ और ९०वाँ प्रागट्यदिन 'अनमोल स्मृति पर्व' का भी उद्घोष हुआ।

P.P. Guruji's Pragatya Din celebration at Delhi

Snehal Sindhu Mar 2026-V08.indd 10 02-06-2026 12:43:14

✻ शनिवार, दि. २१ मार्च को Dviya Jyot Charitable Trust, the Blind Association of Mumbai के पू. मुनीराज विनम्रसागरजी की प्रेरणा से CSR का कार्यक्रम संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम में ७०० प्रज्ञाचक्षु व्यक्तिओं को जीवन जीने के लिये संसाधन दिये गये और उनके तालीम हेतु २५ से उपरांत Stalls भी रखे गये थे। उनको प्रोत्साहित करने के लिये सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुए। योगी डिवाईन सोसासटी की ओर से प.पू. वशीभाई, पू. संदीपभाई देशपांडे तथा प.भ. जिज्ञाबहन, सद्भाव फाउन्डेशन से सु.श्री. नीताबहन दोशीने मिलकर संसाधन की २० Kits का अनुदान दिया। इन सभी संचालक तथा कार्यकरों को इस कार्यक्रम में हाथ बँटाने के लिये धन्यवाद है।

Distribution of Kits to Divya Jyot Charitable Trust

✻ शुक्र दि. २५ मार्च को कलगाम, गुजरात में प्रज्ञा प्रबोधिनी ट्रस्ट द्वारा नई तालीम शाला में शैक्षणिक सहायता के अंतर्गत स्कूल के प्रिन्सिपल श्री. नीलेशभाई पटेल और अन्य शिक्षकों के मार्गदर्शन से २३५ छात्रों को शैक्षणिक Kits प्रदान हुए। योगी डिवाईन सोसायटी की ओर से वापी मंडल के प.भ. रमणभाई, प.भ. दिनेशभाई, प.भ. रमेशभाई और प.भ. कैलाशभाई टंडेलने इस कार्यक्रम में सहभागी होकर इस सामाजिक कार्य को सफल बनाया। इस कार्य का मुख्य हेतु आज के युवाओं को मानसिक रुप से तैयार करने और समाज की सेवा करने था।

Function of Pragnya Prabodhini Trust at Kalgam

✻ गुरुवार, दि. २६ मार्च को हरिजयंती और रामनवमी अवसर 'अक्षरधाम' स्वामिनारायण मंदिर, पवई में भक्तिभाव से मनाया गया।

सुबह में स्वामिनारायण भगवान के प्रागट्यदिन निमित्त विशिष्ट महापूजा की गई, जिसमें पूरी महापूजा की सामग्री नये स्वरुप में सजाकर रखी गई।

शाम की सभा में गुणातीत ज्योत से पू. चारुबहन और संतबहनें पधारे थे। प्रारंभ में गायकवृंदने श्रीजी महाराज और रामचंद्रजी के प्रागट्यदिन निमित्त भजन प्रस्तुत किये। उसके बाद बाल मंडल के बच्चोंने स्वामिनारायण भगवान के अनोखे प्रसंग बताकर स्वरुपों का राजीपा प्राप्त किया। अन्य केन्द्रो के बच्चोंने भी Online के माध्यम से श्रीजी महाराज के प्रसंगो की स्मृति कराई।

Snehal Sindhu Mar 2026-V08.indd 11 02-06-2026 12:43:14

प.पू. वशीभाई ने कहा कि आज बच्चोंने जो प्रसंग बताये तो ऐसा लग रहा था कि बाल घनश्याम यहाँ प्रगट हो गये है। स्वामिनारायण भगवान के चार स्वरुप हो गये। **(१) बाल घनश्याम (२) नीलकंठवर्णी (३) सरजुदास (४) सहजानंदस्वामी।** महाराजने करीब ७ साल नीलकंठवर्णी के रुप में विचरण किया। महाराज अवतार के अवतारी है। उन्होंने जो कार्य किया उसकी कोई तुलना कर नहीं सकता। जब तक हमारे अंदर हठ-मान-ईर्ष्या के भाव है तब तक महाराज हमारे हृदय में स्थित होंगे ही नहीं। काकाजी को जो साक्षात्कार हुआ वह कालातीत था। हम सच्चे दिल से जिसे मानते है वो सामने से हमारे प्रश्नों का उत्तर देगा। तो स्वामिनारायण भगवान के प्रसंगों में से कोई एक हम जीवन में उतारे वही प्रार्थना।

Hari Jayanti and Ram Navami celerbation at "Akshardham" Temple, Powai

प.पू. भरतभाई ने कहा कि आज हमें प्रभु को एक ही प्रार्थना करनी है कि आज के दिन आप प्रगट हुए है तो अब तक की हमारी सारी गलतियाँ माफ कर देना और गुणातीत स्वरुपों का संबंध ज्यादा बढे ऐसी कृपा करना। महाराज मानवरुप में पृथ्वी पर पधारे जो अशक्यं में से शक्य घटना बनी। हम बहुत भाग्यशाली है कि आज भी गुणातीत स्वरुपों द्वारा वे प्रगट ही है। **(१)** महाराज निर्लेप थे। कोई भी वस्तु उन्हें आकर्षित कर ही नहीं सकती। **(२)** वे निर्विकार थे। उनके संबंध में जो भी आता वो भी निर्विकार हो जाता था। २४६ साल हो गये तो भी महाराज की दृष्टि का तथा सामर्थ्य का अनुभव आज भी हो रहा है। **(३)** वे समदृष्टा थे। कोई गरीब, अनपढ या सामान्य व्यक्ति हो, हर किसीके लिये उनकी दृष्टि समान थी। **(४)** वे स्थितप्रज्ञ थे। मान-अपमान, सत्य-असत्य, अच्छा-बुरा कोई भी परिस्थिति में दु:खी नहीं होते थे। बहुत शक्तिशाली होते हुए भी सेवक के सेवक बनकर रहे। कृतघ्नी सेवकराम की सेवा दासभाव से की। वही दासत्वभक्ति हमारे गुणातीत स्वरुपों में सहज ही दिखती है। **(५)** वे निर्भय थे। उन्हें किसी भी प्रकार का भय नहीं था। देहातीत अवस्था में रहते थे। खुन का एक बुंद भी शरीर में रहना नहीं चाहिए ऐसी तपस्या करते थे। **(६)** वे भक्तवत्सल थे। भक्त

Snehal Sindhu Mar 2026-V08.indd 12 02-06-2026 12:43:14

के लिये दूर दूर तक पहुँच जाते थे। महाराज की जितनी बातें करें उतनी कम है। महाराज के जीवन से हम कुछ प्राप्त करें और हम पर उनकी करुणा अखंड रहे वही प्रार्थना।

पेरिस से प.पू. दिनकरभाई ने कहा कि स्वामिनारायण भगवानने छपैया और रामचंद्रजी भगवानने अयोध्या में अवतरण लिया वह भाग्य की बात है। रामचंद्रजी पृथ्वी पर आये तो रामराज्य स्थापित किया। उन्होंने एक वचन, एक पत्नी जीवन में रखी थी। असूरों का अंत लाने भगवान को पृथ्वी पर प्रगट होना ही पडता है। श्री कृष्ण भगवान से लेकर घनश्याम महाराज तक जो भी पधारे, वे अलग-अलग Techniques लेकर पधारे। महाराजने असूरों को भी प्रेम करके उनको ब्रह्मरुप होने की रीत सीखाई। ऐसा सबसे बडा परिवर्तन स्वामिनारायण भगवानने लाया। इससे कुसंगी भी सत्संगी बन जाते है। तो हमें ब्रह्मरुप होकर परब्रह्म की भक्ति करनी है, तो हम किसीका अभाव न ले वही प्रार्थना।

Hari Jayanti and Ram Navami celerbation at "Akshardham" Temple, Powai

अंत में पूर्णाहुति की विशिष्ट आरती हुई।

❊ **गुरुवार, दि. ३० मार्च को कर्जत में CSR** को ध्यान में रखते हुए योगी डिवाईन सोसायटी द्वारा ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाने सफलतापूर्वक कार्यक्रम संपन्न हुआ। उन्हें आत्मनिर्भर और स्थायी आजीविका में मददरुप होने यह कार्य किया गया। साथ ही रायगढ के गुधवनवाडी के Zilla Parishad Primary School में Water Filter प्रदान किया, जिससे छात्रों को स्वच्छ और सुरक्षित पानी उपलब्ध हो सके। वैजनाथ में लडकीयों के लिये शौचालय की सुविधा भी की। गनेगाव-चिंचावली में लडकीयों के लिये शौचालय का निरीक्षण का कार्य भी हुआ।

Snehal Sindhu Mar 2026-V08.indd 13 02-06-2026 12:43:14

Social Activities at Karjat

✻ गुरुवार, दि. ३१ मार्च को **Founder President of Maharashtra English School Trustees Association (MESTA)** डॉ.श्री. संजयराव तायडे पाटीलजी, प.भ. नरेशभाई मुले के साथ 'अक्षरधाम' स्वामिनारायण मंदिर, पवई पधारे थे। उन्होंने सभी संतभाईयों की मुलाकात ली और मंदिर के नूतनीकरण के कार्य में सहायरुप होने रुचि जताई।

With Founder President of Maharashtra English School Trutees Association Dr.Shri. Sanjayrao Taydeji

Snehal Sindhu Mar 2026-V08.indd 14 02-06-2026 12:43:15

‘आपका पैराशूट किसने पैक किया?’

चार्ल्स प्लम्ब वियतनाम युद्ध के दौरान अमेरिकी नौसेना के एक जेट पायलट थे। ७५ युद्ध मिशनों के बाद उनका विमान एक सतह से हवा में मार करनेवाली मिसाइल द्वारा नष्ट कर दिया गया। प्लम्ब ने विमान से पैराशूट के सहारे छलांग लगाई, लेकिन वे दुश्मनों के हाथों में पकडे गए और उन्हें छह साल एक कम्युनिस्ट वियतनामी जेल में बिताए। वे इस कठिन दौर से अपने वतन जीवित लौटे। वे अपने अनुभवों से सीखे गए जीवन के पाठ साझा करते है।

एक दिन जब प्लम्ब और उनकी पत्नी एक रेस्टोरेंट में बैठे थे, तभी पास की मेज पर बैठे एक व्यक्ति ने आकर कहा, ‘आप प्लम्ब हैं? आप वियतनाम में एयरक्राफट कैरियर ‘किटी हॉक’ से फाइटर जेट उडाते थे। आपके विमान को मार गिराया था!’

प्लम्ब ने, आश्चर्य से पूछा, ‘आपको यह कैसे पता?’ उस व्यक्ति ने उत्तर दिया, ‘मैंने आपका पैराशूट पैक किया था!’

प्लम्ब यह सूनकर आश्चर्य और कृतज्ञता से भर गए। उस व्यक्ति ने उनका हाथ मिलाते हुए कहा, ‘लगता है वह काम कर गया!’

प्लम्ब ने कहा, ‘बिलकुल! अगर आपका पैराशूट काम नहीं करता, तो मैं आज यहाँ नहीं होता।’

उस रात प्लम्ब सो नहीं पाए। वे उस व्यक्ति के बारे में सोचते रहे। उन्होंने कहा, ‘मैं सोचता रहा कि वह नौसेना की बर्दी में कैसा दिखता होगा? सफेद टोपी, पीछे लटका हुआ कपडा और बेल-बॉटम पैंट। न जाने कितनी बार मैंने उसे देखा होगा, लेकिन कभी गुड मॉर्निंग तक नहीं कहा, क्योंकि मैं एक फाइटर पायलट था और वह सिर्फ एक नाविक।’

प्लम्ब ने सोचा कि उस नाविक ने जहाज के भीतर लकडी की लंबी मेज पर कितने घंटो तक बैठकर हर पैराशूट को सावधानी से तैयार किया होगा। हर बार अपने हाथों में किसी अनजान व्यक्ति की जिंदगी की जिम्मेदारी लेकर वो पैराशूट अच्छे से काम करें उसका ख्याल रखा होगा।

अब प्लम्ब हम से पूछते हैं कि ‘आपका पैराशूट कौन पैक कर रहा है? किसीने ऐसा कुछ किया है जिससे आपका दिन सुरक्षित, आसान या सुखद बना है? ऐसे लोगों को तुरंत पहचाने और धन्यवाद दें।’

हम सभी ऐसे लोगों से जुडे होते हैं जो हमें दिनभर आगे बढने में मदद करते हैं। कुछ लोग अनजाने में भी हमारी मदद कर जाते हैं। फिर भी उनकी सराहना करें। आप जिस व्यवहार की सराहना करते हैं, तब उसे बढावा देते हैं।

हम सभीको कई तरह के पैराशूट की जरूरत होती है। प्लम्ब बताते हैं कि जब उनका विमान गिराया गया, तब उन्हें केवल शारीरिक ही नहीं, बल्कि मानसिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक पैराशूट की भी आवश्यकता थी। उन्होंने इन सभी का सहारा लिया और सुरक्षित पहुँचे और आज भी सुरक्षित है।

Snehal Sindhu Mar 2026-V08.indd 15 02-06-2026 12:43:15

जीवन की रोजमर्रा की चुनौतियों में हम अक्सर महत्त्वपूर्ण बातों को भूल जाते हैं। हम नमस्ते, कृपया, धन्यवाद या बधाई जैसे सरल शब्द कहने में भी चूक जाते हैं।

आज के दिन, थोडा समय निकालें और उन लोगों को पहचानें जिन्होंने आपका पैराशूट पैक किया है।

प्यारे सत्संगी स्वजनो!

प्लम्ब की यह बात हम सभीको बहुत उमदा सीख दे जाती है। हम दैनिक जीवन में कितनी सारी सुविधा का अनुभव करते है। सुबह उठने से लेकर रात को सोने तक हमारी कितनी सारी जरुरियातें कोई दूसरी व्यक्ति ही सँभालती है। चाहे वह हमारे घर के सदस्य हो या हमारे कर्मचारी हो, सेवक हो या सामान्य सत्संगी स्वजन हो। कितनी बार ये सभी या तो अपनी दैनिक क्रिया की जिम्मेदारी के रुप में या तो भक्तिभाव से हमारा महिमा समझ कर हमें सहायरुप होते है। क्या हमने कभी भी ऐसी व्यक्तियों को व्यक्तिगत रुप से धन्यवाद दिया है? कभी भी हमारी बातों में उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त की है? इससे भी आगे उनको कैसे सहायरुप हो सके ऐसा हमारा वर्तन है? ब्र.स्व. योगीजी महाराज ऐसी सारी बातों का बहुत ही ध्यान से और महिमा से ख्याल रखते थे। अक्षरदेरी गोंडल में अपनी टपाल लेकर आनेवाले टपाली को भी वो टपाली साहब कहते थे और उनकी खबर पूछते थे। अपनी गाडी चलानेवाले सारथिओं को भी वे अंगतरुप से मिलते थे और उनकी सेवा की सराहना करते थे। यहाँ गुरुहरि काकाजी महाराज के एक बहुत प्रेरणादायक प्रसंग की याद आती है।

एकबार काकाजी अमरिका के बाल्टीमोर में प.भ. ललितकाका के एक मित्र प.भ. जयंतीभाई के घर पधरामणी के लिये गये थे। वहाँ से काकाजी को White house जाना था जो काफी दूर था। जयंतीभाई ने कहा कि मैं कल सुबह ९ बजे आपको वहाँ ले जाने आऊँगा।

दूसरे दिन बताये गये समय पर बापु और काकाजी तैयार होकर जयंतीभाई की राह देख रहे थे। जयंतीभाई को आने में देर हुई इसलिये उन्होंने फोन करके बापु को बताया। तो बापुने उन्हें जल्दी आने के लिये आग्रह किया। काकाजीने वह सुन लिया और तुरंत फोन लेकर उनसे कहा कि हमें कोई जल्दी नहीं है, आप आराम से आना। साथ ही चाय-नास्ता करने के लिये भी उन्हें कहा। काकाजीने कहा कि मेरा सेक्रेटरी आपको अेक्युप्रेसर भी करके देगा। काकाजीने बापु को समझाया कि आप समझते हो कि पूरी दुनिया मेरे लिये है, जब मैं ऐसा मानता हूँ कि मुझे दूसरों के लिये जीना है। पूरी रात काम किया हुआ आदमी थका नहीं होगा? आप उन्हें ऐसे कैसे ओर्डर दे सकते हो? हमें हमेशा पहले दूसरों के बारे में सोचना चाहिए। कुछ देर बाद जयंतीभाई आये। काकाजीने बापु को उनके लिये चाय-नास्ता बनाने को कहा। स्वस्थ होने के बाद काकाजी और बापु उनके साथ जहाँ जाना था वहाँ के लिये निकले और सभी कार्यक्रम समय के मुताबिक पूर्ण हुए।

परदेश में काकाजी कईंबार हरिभक्त के घर जाते तो सुबह में जल्दी उठकर अपना काम पूर्ण कर लेते या तो जब तक घर के सभी सदस्य तैयार हो के अपने काम के लिये निकल न जायें तब तक काकाजी उन्हें कोई भी तकलीफ देते नहीं थे। काकाजी हमेशा दूसरों की सहायता करने की ओर ज्यादा ध्यान रखते थे, तो हम भी यह बात सोचे। हमारे रोजिंदा जीवन में कितनी व्यक्ति हमारे कितने काम करती है उसकी अगर हम यादी बनाये तो हम ताज्जुब हो जायेंगे कि हमारे जो काम आसानी से हो जाते है उसमें कितनी व्यक्तिओं का अनगिनत उपकार है। हम सभी दास के दास बनने की बहुत बातें करते है, लेकिन हम जरा ध्यान से देखे तो हमें ख्याल आ जायेगा कि वास्तव में हम सचमुच दास के दास है? हमारी छोटी छोटी जरुरियातें या तो जो काम करने के लिये हम पूर्ण तरह से सक्षम है वैसे कितने काम के लिये भी हम दूसरों पर निर्भर रहते है। दास के दास यानि दूसरों को यहाँ तक की हमारे सेवक के सेवक को भी सहायरुप होना ऐसा उसका अर्थ होता है। तो हम यह संकल्प करें कि हम दूसरों को सहायरुप नहीं

Snehal Sindhu Mar 2026-V08.indd 16 02-06-2026 12:43:15

होते लेकिन उनके ऊपर बोज तो न बने या जो काम कर सकते है उसके लिये भी उनके ऊपर अपेक्षा या निर्भर न रहे। तो आज से हमारे वर्तन में जरुर बदलाव लायें।

गुरुहरि काकाजी महाराज के स्मृतिदिन (दि. ७ मार्च) के मंगल दिन भगवान स्वामिनारायण और गुणातीत स्वरुपों को प्रार्थना करें कि हम हररोज भगवान को ही नहीं, लेकिन हमें जो भी सहायरुप हो ऐसी सभी व्यक्तिओं को धन्यवाद दे और हमारे छोटे छोटे काम हो सके तो खुद ही करें तथा बडे कामों के लिये इन सभीको सहायरुप हो सके ऐसी समझ और शक्ति वे हमें प्रदान करें।

અક્ષરધામ ગમન

✻ કંથારિયાના વરિષ્ઠ સંત જેઓને બ્ર.સ્વ. યોગીજી મહારાજે ૫૧ યોગેશ્વરો સાથે દીક્ષા આપી હતી એવા પ.પૂ. શ્રીજીજીવનસ્વામીજી (૮૩) ટૂંકી બીમારી ભોગવી તા. ૧ માર્ચ, ૨૦૨૬ના અક્ષરનિવાસી થયા.

શ્રીજીજીવનસ્વામીનો જન્મ માણાવદરમાં થયો હતો. નાનપણથી સ્વામિનારાયણનો જોગ કુટુંબમાં હતો. તેમના પિતાશ્રી જેરામભાઈ માણાવદરના એકાંતિક મુક્તરાજ હતા અને દેવશીબાપાના સાથીદાર હતા. ગુરૂહરિ કાકાજી માણાવદર આવ્યા હતા ત્યારે પ્રથમ દર્શને જ હેતના તાંતણે શ્રીજીજીવનસ્વામીજી તેમનાથી બંધાઈ ગયા. કાકાજી દ્વારા યોગીબાપાનાં દર્શન થતાં ચૈતન્ય ભેદાઈ ગયો. તેઓ ખૂબ શૂરવીર અને સાહસિક હતા. કાકાજીના હેતે કરીને પોતાનું જીવન યોગીબાપાને સમર્પિત કરી ઈ.સ. ૧૯૬૧માં ભાગવતી દીક્ષા ગ્રહણ કરી. પોતાની આગવી સૂઝ, સમજ, આવડત અને હોશિયારીથી સેવા કરી ગુણાતીત સ્વરૂપોનો રાજીપો પ્રાપ્ત કરી લીધો. નિયમ, નિશ્ચય, પક્ષ અને નિર્દોષબુદ્ધિ તેમના જીવનમાં સહજ હતાં. સાધુતાના નિયમમાં ખૂબ જ ચૂસ્ત અને પ્રામાણિક હતા. સાંકરદા મંદિરના જાણે ધણી હોય તેમ સંભાળ રાખતા. ૮૦ વર્ષ સુધી તેમણે મંદિર અને સહુની નિઃસ્વાર્થભાવે સેવા કરી. કોઈ અપેક્ષા કે સન્માન વગર કેવળ નિર્લેપભાવે સેવામાં જોડાઈ રહ્યા.

કાકાજી–પપ્પાજીની મરજી મુજબ સોખડા, સાંકરદા રહેવાનું થયું તો બ્ર.સ્વ. હરિપ્રસાદસ્વામીજી અને બ્ર.સ્વ. અક્ષરવિહારીસ્વામીજીમાં યોગીબાપા વિરાજમાન છે એમ ધારી તેમની અંતરની પ્રસન્નતા પ્રાપ્ત કરી. છેલ્લા ૨૫ વર્ષથી કંથારિયામાં પ.પૂ. વિજ્ઞાનસ્વામીજીની સાથે રહી પપ્પાજી અને આખાય સમાજની સેવા કરવામાં જોડાઈ ગયા. શ્રીજીજીવનસ્વામીજીએ ક્યારેય કોઈ ફરિયાદ કરી નથી. પોતાના અંત સમયે પણ પોતાના માટે કોઈ જ પ્રકારની સુખ સુવિધાની અપેક્ષા રાખી નથી. નિર્દોષબુદ્ધિથી આખુંય જીવન સાધુતાની રીતે જીવ્યા. એમના છેલ્લા દિવસો દરમ્યાન ગુણાતીત પ્રકાશના સંતભાઈઓએ તેમની સારી સેવા કરી હતી.

તેઓએ આવું નિષ્ઠાપૂર્વકનું જીવન જીવી આપણી સમક્ષ એક આદર્શ મૂક્યો છે. તેઓની ત્રયોદશીની મહાપૂજા તા. ૮ માર્ચે કંથારિયા ખાતે તેમની દિવ્ય સ્મૃતિમાં કરવામાં આવી હતી. તેમની અંતિમ યાત્રામાં સંતભગવંત સાહેબજી તથા અનુપમ મિશનના સંતભાઇઓ તથા હરિધામ, સાંકરદાના સંતોની હાજરીમાં હરિધામ ખાતે કરવામાં આવી હતી. સહુએ તેમને ભાવપૂર્વક શ્રદ્ધાંજલિ અર્પી હતી.

ભગવાન સ્વામિનારાયણ, ગુરૂહરિ કાકાજી મહારાજ, ગુરૂહરિ પપ્પાજી મહારાજ તથા સર્વે ગુણાતીત સ્વરૂપો તેમના જેવી જાગ્રતતા, નિર્દોષબુદ્ધિયુક્ત જીવન જીવવાની સૂઝ આપણને આપે એ જ પ્રાર્થના.

RNI Regn No : MAHMUL/2015/62272
Date of publication: 8th of every month
POSTED AT MUMBAI PATRIKA CHANNEL SORTING OFFICE MUMBAI 400001

Postal Regn No: MCW/329/2018-20
Date of posting:11th of every month

Summary of Events

(1) B.S. Bhagatji Maharaj's 197th and SantBhagvant Sahebji's 87th Pragatyadin celebration on 2nd and 3rd March at "Brahmajyoti", Mogri. (2) Distribution of Medical equipment to Orthopadic and Spine Department in Sion Hospital from Sadbhav Foundation on 6th March. (3) Bhajan Sandhya on 7th March at Jagraon-Punjab. (4) P.P. Dinkarbhai and P.P. Kishorebhai Masters at London for SantBhagvant Sahebji's Pragatya Din celebration on 8th March. (5) On the occasion of Women's Day Health check-up and various activities done by Yogi Divine Society and Sadbhav Foundation at Karjat on 8th March. (6) P.P. Guruji's 89th Pragatya Din celebration on 13th March at Delhi. (7) Distribution of 20 Kits for visually impacted indivituals to Divya Jyot Charitable Trust, the Blind Association of Mumbai from Yogi Divine Society and Sadbhav Foundation on 21st March. (8) Voluntary services by Vapi Mandal at Kalgam Village under auspicious of Yogi divine society and Pragnya Prabodhini Trust on 25th March. (9) Pragatyadin Celebration of Swaminarayan Bhagwan and Ramnavami at "Akshardham" Temple, Powai on 26th March. (10) Distribution of Water filter to Zilla Parishad Primary School, Gudhvanvadi, construction of Toilets for Girls in Vaijnath and Gneval-Chinchavali of Karjat Raigad District by Yogi Divine Society and Sadbhav Foundation on 30th March. (11) Visit by Dr. Sanjayrao Tayade Patilji, Founder President of Maharashtra English School at "Akshardham" Temple, Powai on 31st March. (12) Article on auspicious day of Guruhari Kakaji Maharaj's 41st Smruti Din on 7th March. (13) Akshardhamgaman of P.P. Shrijijivan Swamiji of Kanthariya on 1st March.

Space for address

Space for franking

Printed Matter - Book Post

From

YOGI DIVINE SOCIETY

6D Sonawala Building, Tardeo,
Mumbai - 400 007 Tel: 2380 2527

'Akshardham' Swaminarayan Temple,
Near Hiranandani Hospital, Powai, Mumbai - 400 076
Tel: 2578 2151/2579 4314 Email: isrc@kakaji.org

Printed & Published by Bharat P Mehta on behalf of Yogi Divine Society & Printed at Jalaram Enterprise, Fairy Manor, 13, Rustom Sidhwa Marg (Gunbow Street), Fort, Mumbai - 400 001 & Published by Yogi Divine Society, 6D, Sonavala Building, 4th Floor, Tardeo, Mumbai - 400 007.

Editor: Bharat P Mehta

Snehal Sindhu Mar 2026-V08.indd 18 02-06-2026 12:43:15